आत्मज्ञान का शासन

पुराने ज़माने में राजाओं के पास राजगुरु हुआ करते थे। दशरथ के गुरु वशिष्ठ और पाण्डवों के गुरु श्रीकृष्ण ह। राजगुरु के बिना राजा पतवार रहित नाव जैसा होता है। आध्यात्मिकता के बिना सामाजिकता और भौतिकता लक्ष्यविहीन गमन जैसा है। आत्मज्ञान रहित लोकज्ञान-निराशा और असंतृप्ति को जन्म देते हैं। यदि जीवन में केवल खाना और सोना, वस्तु व वाहन प्राप्ति ही आदर्श हैं तो मनुष्य की सहज प्रकृति हमेशा छिपी रहती है। समाज में अशांति, असन्तोष ब बीमारी हमेशा बनी रहती है।

हमें चाहिए रामराज्य और कृष्णराज्य। तो हमें भी राम-कृष्ण की तरह शास्त्रज्ञ होना होगा। तभी रामराज्य कष्णराज्य की स्थापना होगी। वशिष्ठ के पास रह कर ध्यान और ज्ञान का अभ्यास करके दशरथ पुत्र श्रीराम राजा हो गए। सांदीपन मुनि के पास ध्यान-ज्ञान का अभ्यास करके देवकीपुत्र श्रीकृष्ण राजा हो गए।

आत्मज्ञानी को ही राजा होना चाहिए, नहीं तो शासन में रहने वालों को आत्मज्ञान अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए तभी धर्मयुक्त शासन साध्य होता है। हम सब मिल कर इसके लिए प्रयत्न करेंगे।

सुकरात के स्वप्न को साकार करेंगे।

नयी दुनिया की सृष्टि का श्री गणेश करेंगे।

सत्य युग की स्थापना करेंगे।

सत्यमेव जयते। आत्मेव जयते।।